वर्ष : 7 अंक : 23-24

मूल्य : ₹ 30

चिंतन दिशा

साहित्य और समाज विमर्श का त्रैमासिक

सैयद रजा की पेंटिंग

संपादकीय : **अनिश्चितता के दौर में कश्मीर**

आलेख : **भीष्म साहनी के शताब्दी वर्ष में तमस** ■ **पाषाण युगीन अंडमानी आदिवासियों का अभिशप्त जीवन**

समाज-विमर्श : **विश्व में संदेह और अविश्वास का बढ़ता घेरा**

कहानियां : **ऐ माँ तुझे सलाम** (आबिद सुरती) ■ **नाम में क्या रखा है** (कविता विकास) ■ **बेरोजगारी** (देवांशु)

कविताएं : **शोभनाथ यादव** ■ **जयप्रकाश मानस** ■ **निदा नवाज** ■ **स्वप्निल श्रीवास्तव** ■ **महाराज कृष्ण संतोषी**

लघुकथाएं : **नन्दल कुमार हितैषी** ■ **पत्रकारिकता की आजादी पर मंडराते खतरे** : सरोज त्रिपाठी

मुद्रित शब्द के परे : आभासी संसार में उथल-पुथल : मुनि मुक्तिकंठ

संपादक : हृदयेश मयंक

क्या आपका मौजूदा बचत खाता

वाक़ई बचत कर रहा है?

बैंक ऑफ़ बड़ौदा के बचत खातों में से चुनिए अपनी पसंद.
इन-बिल्ट ख़ूबियों और फ़ायदों के साथ, जो आपका समय और पैसा, दोनों बचाए.

बचत बैंक खाता	सुपर सेविंग्स बैंक खाता	बड़ौदा सैलरी एडवांटेज बचत खाता
• हमारे बैंक ATM पर डेबिट कार्ड का असीमित इस्तेमाल • मुफ़्त नेट बैंकिंग, मोबाइल बैंकिंग और एम पासबुक • बड़ौदा रिवॉर्ड्ज़ - ऑनलाइन ख़रीदारी के लिए डेबिट कार्ड के इस्तेमाल पर एक आकर्षक लॉयल्टी प्रोग्राम • मिस्ड कॉल अलर्ट द्वारा बैलेंस की जांच	• रु.20,000 से अधिक के बैलेंस पर पाइए शॉर्ट डिपॉज़िट ब्याज • ऑटो स्वीप/रिवर्स स्वीप सुविधा • मुफ़्त असीमित चेक बुक और मांग ड्राफ़्ट • डीमैट सेवा पर 25% की छूट	• रु.1 लाख तक क्लीन ओवरड्राफ़्ट की सुविधा उपलब्ध • न्यूनतम बैलेंस की कोई ज़रूरत नहीं • प्लैटिनम मास्टर/रुपे कार्ड के लिए एयरपोर्ट लाउंज • मिस्ड कॉल अलर्ट द्वारा बैलेंस की जांच

शर्तें लागू.

टोल फ़्री नं. पर कॉल करें | 1800 22 33 44
सुबह 6-रात 10 बजे | 1800 102 44 55
वेब चैट-24X7
www.bankofbaroda.co.in
हमें यहाँ फ़ॉलो करें

बैंक ऑफ़ बड़ौदा
Bank of Baroda
भारत का अंतर्राष्ट्रीय बैंक

REG. NO. MAH-HIN-39947/86

चिंतन दिशा

वर्ष 7 ■ अंक 23-24
संयुक्तांक : अप्रैल-सितंबर-2016

सलाहकार संपादक
विनोद कुमार श्रीवास्तव

परामर्श एवं संपादन सहयोग
रमेश राजहंस
राकेश शर्मा
रमन मिश्र
शैलेश सिंह

संपादक
हृदयेश मयंक

संपादकीय कार्यालय
ए-701, आशीर्वाद-1, पूनम सागर कॉम्पलेक्स, मीरा रोड (पूर्व), मुंबई 401107. संपर्क : 09869118707
email : chintandisha@gmail.com

अक्षर संयोजन एवं लेआउट
क्रिएटिव इमेज, मुंबई
09819615352 / 9987379849

सदस्यता शुल्क
एक प्रति : 30 रुपए
वार्षिक : 150 रुपए
आजीवन : 10,000 रुपए
सहयोगी : 5000 रुपए

विदेशों के लिए : 20 अमेरिकी डॉलर
चेक/ड्रॉफ्ट 'चिंतन दिशा' के नाम से रेखांकित करें। ऑन लाइन सदस्यता शुल्क/सहयोग राशि के लिए
इलाहाबाद बैंक (मीरा रोड)
खाता क्रमांक : 50034426754
IFSC : ALLA0212110

सभी पद अवैतनिक। न्याय क्षेत्र, मुंबई

पत्रिका में प्रकाशित लेखकों के विचारों से संपादक और परामर्शदाताओं का सहमत होना ज़रूरी नहीं है।

स्वत्वाधिकारी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक हृदयेश मयंक ने मिलेनियम आर्ट्स, डी-19-20, आकुर्ली इंडस्ट्रीयल इस्टेट, कांदिवली (पूर्व), मुंबई से छपवाकर शॉप नं. 3, आई-59/60, नवग्रह अपार्टमेंट, पूनम सागर कॉम्पलेक्स, मीरा रोड (पूर्व), से प्रकाशित।

अनुक्रमणिका

संपादकीय

- अनिश्चितता के दौर में कश्मीर / हृदयेश मयंक - **05**

आलेख

- भीष्म साहनी के शताब्दी वर्ष में तमस / प्रो. वशिष्ठ अनूप - **07**
- पाषण युगीन अंडमानी आदिवासियों का अभिशप्त जीवन / किरण वाडीकर - **11**

- संता-बंता पत्रकारिकता और खुशवंत सिंह / देवरिया उन्मेष - **19**
- आधुनिकता-भावनात्मकता प्रतिरोध / लाल्टू - **24**

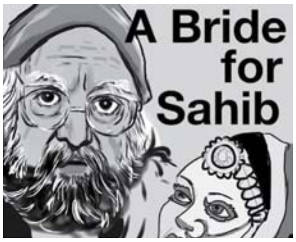

समाज-विमर्श

- विश्व में संदेह और अविश्वास का बढ़ता घेरा / रमेश राजहंस - **28**

स्मृति शेष

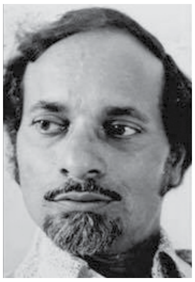

- अवसान सांस्कृतिक योद्धा का : मुद्राराक्षस - **31**
- मेरा शब्द : मुद्राराक्षस - **35**
- मीरा श्रीवास्तव : एक विरले व्यक्तित्व का जाना - **36**
- मीरा श्रीवास्तव की कहानी : नित्यकर्म - **38**
- मीरा श्रीवास्तव की कहानी : कृतिका - **44**
- मीरा की कविताएं - **46**

कहानियां

- ऐ माँ तुझे सलाम / आबिद सुरती - **50**
- नाम में क्या रखा है / कविता विकास - **52**
- बेरोजगारी / देवांशु - **57**

भाषांतर

- कुट्टि मामा की दंत कथा / नारायण गंगोपाध्याय - **61**

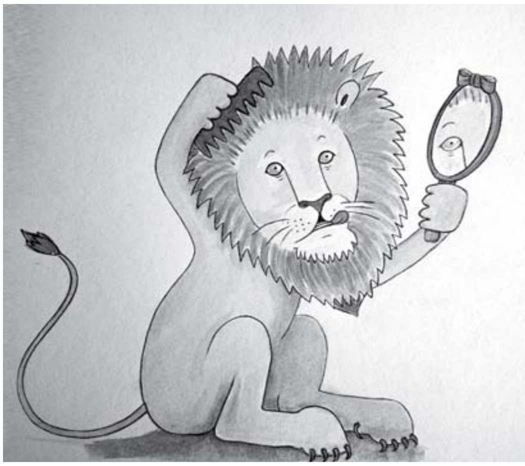

विश्व-साहित्य

- लॉटरी टिकट (रूसी कहानी) / ए. चेखब - **65**
- लातिनी अमेरिकी कहानी 'टोड्स माउथ' मेंढक का मुँह : इजाबेल अलेंदे - **68**

लघु कथाएं

- नन्दल कुमार हितैषी की लघुकथाएं - **72**

कविताएं

- शोभनाथ यादव - **74** • जयप्रकाश मानस - **75**
- निदा नवाज - **77** • स्वप्निल श्रीवास्तव - **78**
- महाराज कृष्ण संतोषी - **80**

ग़ज़ल

- कैलास सेंगर - **82** • संदीप गुप्ते - **83** • सैय्यद रियाज़ रहीम - **84** • लक्ष्मण - **85**

गीत

- बनारस से लौटकर / यश मालवीय - **86**

समीक्षा

- नारीवादी लेखन का घोषणा-पत्र / डॉ. सूर्यनारायण रणसुभे - **87**
- कुछ भूला, कुछ याद रहा / डॉ. मधुकर खराटे - **89**
- देश, साहित्य और समाज / डॉ. माधुरी छेड़ा - **91**

पत्रकारिता

- पत्रकारिकता की आजादी पर मंडराते खतरे / सरोज त्रिपाठी - **94**

पत्रिका परिक्रमा

- मुद्रित शब्द के परे : आभासी संसार में उथल-पुथल / मुनि मुक्तिकंठ - **97**

आवरण पृष्ठ : एस. रज़ा

संपादकीय

अनिश्चितता के दौर में कश्मीर

सरकारी इकाइयों का बड़े पैमाने पर निजीकरण, निरंतर बढ़ते साम्प्रदायिक ध्रुवीकरण की प्रवृत्ति सत्ताधीशों में दिखाई पड़ रही है। तानाशाही रवैया भारतीय जनतंत्र के हित में नहीं है। अंतरर्राष्ट्रीय स्तर पर अपनी छवि सुधारने की बात ठीक है पर इतने बड़े पैमाने पर निवेश के लिए सभी दरवाजे खोलना कितना उचित होगा, इस पर ध्यान देना अवाश्यक है।

चिंतनदिशा का यह अंक एक ऐसे समय में आपके हाथों तक पहुंच रहा है जब एक बार फिर पूरा देश अनिश्चितता की गर्त में है। कश्मीर समस्या इतनी बुरी स्थितियों में कभी नहीं थी। सड़क पर खून-खराबा और वहां के जन-जीवन में असंतोष विकट रूप धारण कर चुका है। कश्मीर इस देश का हिस्सा है और वहां के लोग इसी देश के नागरिक हैं। सड़कों पर किसी आंदोलन के तहत लोग स्वेच्छा से विरोध में उतर आते हैं और निहित स्वार्थों द्वारा संगठित रूप में दबाव के तहत उतारे भी जाते हैं। दोनों स्थितियों को ध्यान में रखते हुए ही बहुत सोच-समझकर कार्यवाही की जानी चाहिए। दमन व सैन्य बलों का प्रयोग तत्कालिक हल हो सकते हैं पर स्थायित्व के लिए उनसे समझदारी विकसित करने का रास्ता ही सही रास्ता है। तमाम आर्थिक घोषणाओं के बावजूद सारा किया धरा पानी में न चला जाये। कश्मीर में इस समय भाजपा की मिलीजुली सरकार है। वातावरण व हालात सुधरने की बजाय वे काबू होते जा रहे हैं यह चिंता का विषय है।

सरकारी इकाइयों का बड़े पैमाने पर निजीकरण, निरंतर बढ़ते साम्प्रदायिक ध्रुवीकरण की प्रवृत्ति सत्ताधीशों में दिखाई पड़ रही है। तानाशाही रवैया भारतीय जनतंत्र के हित में नहीं है। अंतरर्राष्ट्रीय स्तर पर अपनी छवि सुधारने की बात ठीक है पर इतने बड़े पैमाने पर निवेश के लिए सभी दरवाजे खोलना कितना उचित होगा, इस पर ध्यान देना अवाश्यक है। वर्ना निवेश तो होगा, बहुराष्ट्रीय कंपनियां अपनी शर्तो पर आयेंगी भी और सही वातावरण के अभाव व जो छवि बन रही है उसे ध्वस्त होने में तनिक समय नहीं लगेगा। रक्षा उत्पादों में अंतरर्राष्ट्रीय निवेश कहीं अपनी संप्रभुता सौंपने का उपक्रम न साबित हो, इसका ध्यान रखना पड़ेगा।

स्व. मीरा श्रीवास्तव बहुत अच्छी कवियत्री और लेखिका थीं। वह चिंतन दिशा के सलाहकार संपादक श्री विनोद कुमार श्रीवास्तव की पत्नी थीं। उनके आकस्मिक निधन ने हम सबको व्याथित कर दिया। उनकी बीमारी के दौरान हम सभी साथी चिंतित व दुःखी थे विनोद जी ने रात-दिन एक कर उनकी सेवा व इलाज का गुरुतर भार संभाल रखा था। पर उनके दोनों पुत्रों और पुत्रवधुओं ने भी कोई कसर न छोड़ रखी थी। हमने पति की सेवा सुश्रुषा के बारे में बहुत सुने थे पर पत्नी सेवा का ऐसा उदाहरण हमे विरल देखने को मिला। बीमारी के दिनों में विनोद जी के पास एक मात्र विषय मीरा जी की सेवा का रह गया था। उन्होंने अपनी चिंता नहीं की पर उन्हें बचाये रखने के तरह-तरह के उपक्रम जो संभव थे किया। पर मृत्यु का दिन अंततः आ ही धमका। मीरा जी का एक व्यक्तित्व जो बहुत छुपा हुआ और बहुत निजी था वह उनके साहित्य का था। उस व्यक्तिव के कुछ पहलुओं को हम चिंतन दिशा के पाठकों के साथ साझा करना चाहते हैं। इस अंक में उनकी कुछ कविताएं, कहानियां व कुछ संस्मरण हम दे रहे हैं। उनका यह पक्ष हमें उन्हें जानने व उनके प्रति श्रद्धावनत होने का मौका देगा।

मुद्राराक्षस जी की स्मृतियां हमारे ज़ेहन में हैं। वे मुंबई आये थे और हमें उनका सानिध्य मिला था। उनका एक ऐसे समय में जाना हमें दुःखदायी लग रहा है जब फासीवाद की आहटें निकट कान तक सुनाई पड़ रही है। इस समय विरोध व प्रतिपक्ष नदारद है। एक विद्रोही

बेबाक व्यक्तित्व का चले जाना दुःखद है। मुद्रा जी ने 'धर्मग्रंथों का पुनरपाठ' जैसी रचना लिखकर हिंदुत्ववादी ताकतों को एक तरह से चुनौती दी थी। उन्होंने भगतसिंह पर पुस्तक लिखकर उनकी इस दौर में भी प्रासंगिकता को सिद्ध किया था। उनका उपन्यास 'दंड विधान' भारतीय समाज के सर्वहारा मुसहर समाज पर आधारित है। उन्होंने देश के सभी शीर्षस्थ साहित्यकों से मुठभेड़ किया। वे कॉ-डांगे लोहिया के सीधे संपर्क में रहे थे। पद प्रतिष्ठा व पुरस्कार से वे मीलों भागते रहे थे। दलित समाज का उनके प्रति बहुत ही आदरपूर्ण व्यवहार था।

आंबेडकरवादी सगठनों ने उन्हे 'आंबेडकर रत्न' शुद्राचार्य सरीखी उपाधियों से नवाजा था। उनका जन अभिनंदन सिक्कों से तौलकर किया गया था। मुद्राजी जब मुंबई आये थे हमारे सहयोगी संपादक रमन मिश्र के निवास पर ठहरे थे। शैलेश सिंह और मुझे उन्हें शहर के साथियों से मिलवाने का जिम्मा मिला था। आज जब वे नहीं हैं चिंतन दिशा परिवार उनके निधन से दुःखी है। एक संघर्षशील व विद्रोही व्यक्तित्व की स्मृति में भाई कौशल किशोर का आलेख उनके प्रति इस परिवार की ओर से विनम्र श्रद्धाजलि स्वरूप दिया जा रहा है।

मीरा जी का एक व्यक्तित्व जो बहुत छुपा हुआ और बहुत निजी था वह उनके साहित्य का था। उस व्यक्तिव के कुछ पहलुओं को हम चिंतन दिशा के पाठकों के साथ साझा करना चाहते हैं। इस अंक में उनकी कुछ कविताएं, एक कहानी व कुछ संस्मरण हम दे रहे हैं। उनका यह पक्ष हमें उन्हें जानने व उनके प्रति श्रद्धावनत होने का मौका देगा।

मित्रों! चिंतन दिशा का कोई भी अंक आखिरी अंक हो सकता है। कारण स्पष्ट है धनाभाव। विगत सात वर्षों से हम लगातार लेखकों, बुद्धिजीवियों और प्रतिबद्ध रचनाकारों को अंक भेजते रहे हैं, इस उम्मीद से कि वे अपने अनुभवों से हर तरह से हमारा सहयोग अवश्य करेंगे। निराशा हाथ लगी। सबसे ज्यादा निराशा प्रतिबद्ध संगठनों से जुड़े लेखकों से हुई। निराशा उनसे भी हुई जिन्होंने दंभ करते हुए दिलासा दिया था कि वे सब मोर्चे पर साथ देंगे और चिंतन दिशा के प्रकाशन को निरंतरता मिलती रहेगी। कुछ नये लेखकों व संस्कृति कर्मियों ने अपने से आगे आकर लेखकीय सहयोग किया जिससे मुझे बल मिला। कुछ लोगों ने अनपेक्षित भाव से आर्थिक सहयोग भी किया जो स्तुत्य है। आगे देखते हैं कि चिंतन दिशा इतने वर्षों में अपने कितने शुभचिंतक बना पायी है?

इस दौरान हिंदी साहित्य व कला की कई महत्वपूर्ण सुप्रसिद्ध साहित्यक हस्तियां हमसे विदा ले चुकी हैं कवि उमेश चौहान, मराठी के सुप्रसिद्ध कवि तुलसी परब, और हसन जमाल, नीलाभ, सैयद हैदर रजा, पत्रकार लाजपत राय हमसे सदा के लिए विछुड़ गये हैं। अभी-अभी हिन्दी फिल्मों की एक ज़माने में लोकप्रिय गायिका मुबारक बेगम के निधन की खबर आई है। चिंतन दिशा परिवार सभी संस्कृति कर्मियों के प्रति श्रद्धाजलि व्यक्त करता है जो अपनी-अपनी प्रतिभा के अनुसार कला-साहित्य की सेवा में स्वयं को होम कर गये।

पाठकों और लेखक मित्रों से निवेदन

'चिंतन दिशा' आपकी अपनी पत्रिका है। इसे आप से हर तरह से सहयोग की अपेक्षा है। समकालीन साहित्य व समाज की व्यापक चिंताओं को केंद्र में रखकर अनेक विशेषांकों की योजना है जो बिना आपके सहयोग के पूरी नहीं हो सकती। अतः आप से अनुरोध है कि अपनी श्रेष्ठ रचनाओं के अलावा आपके आसपास हो रही साहित्यिक-सांस्कृतिक गतिविधियों की सूचनाओं से हमें अवगत करायें।

राष्ट्रीय स्तर पर चल रही साहित्यिक गतिविधियों की व्यापक खोजबीन और उन पर सार्थक टिप्पणी के लिए यह मंच आपका स्वागत करता है।

ऐसे रचनाकार जो किन्ही कारणों से अपने अंचल विशेष के होकर रह गये हों और जिन्हे समाज की नज़र से यथोचित स्थान मिलना ही चाहिए, उन पर विशेष सामग्री हमें भेजी जा सकती है।

'चिंतन दिशा' में प्रकाशन हेतु रचनाएं ई-मेल से भेजते समय इतनी सी सावधानी रखें कि सामान्य वर्ड फाइल (.doc) ही भेजें एवं विज्ञापन आदि (pdf) फाइल। उसमें बहुत अधिक फार्मेटिंग, डिजाइनिंग आदि न करें। यदि संभव हो तो यूनिकोड मंगल फोंट (intetnet font) में ही भेजें।

संपर्क :
ए-701, आशीर्वाद-1, पूनम सागर कॉम्पलेक्स,
मीरा रोड (पूर्व) 401107.
मो. 09869118707
email : chintandisha@gmail.com